प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2 (2019–20)

हिन्दी–अ कोड (002)

कक्षा–9

निर्धारित समय– 3 घंटे अधिकतम अंक – 80

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खण्ड – क (अपठित अंश) 15

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

मनुष्य अपने संकल्पों का बना हुआ है। जैसा वह संकल्प करता है, वैसा ही वह होता है। एकलव्य ने संकल्प किया अद्वितीय धनुर्धर बनने का। उसने कहा, 'यदि मेरी जिज्ञासा सच्ची होगी तो मुझे कोई भी रोक नहीं पाएगा। इतना ही नहीं, द्रोणाचार्य ही मेरे गुरु होंगे।' और हुआ भी वही। स्वयं गुरु द्रोणाचार्य को उसकी कुटिया तक आना पड़ा, उसकी धनुर्विद्या हेतु सर्वोत्कृष्टता का प्रमाण–पत्र देने के लिए। दृढ़ संकल्प वाले किस प्रकार कार्य करते हैं यह प्रहलाद के जीवन से जाना जा सकता है। ध्रुव बालक सही, पर वह आदियुग की निष्ठा और विश्वास का प्रतीक था। उसने अपने संकल्प के बल पर अविचल पद प्राप्त कर लिया। भक्तिमती शबरी भी संकल्पनिष्ठा का अप्रतिम उदाहरण है।

1. मनुष्य अपने भावी जीवन में कैसा बन जाता है? 2
उत्तर : मनुष्य अपने संकल्पों का बना हुआ है वह मनुष्य अपने भावी जीवन में जैसा संकल्प करता है, वैसा ही बन जाता है।
2. एकलव्य सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर कैसे बना? 2
उत्तर : एकलव्य ने संकल्प किया कि वह अद्वितीय धनुर्धर बनेगा। उसने धनुर्विद्या का खूब अभ्यास किया और सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बन गया।
3. द्रोणाचार्य एकलव्य के पास क्यों गए? उन्होंने उसको क्या दिया? 2
उत्तर : द्रोणाचार्य एकलव्य की धनुर्विद्या का अभ्यास देखकर उसके पास गये। उन्होंने उसको सर्वोत्कृष्टता का प्रमाण–पत्र दिया।
4. 'यदि मेरी <u>जिज्ञासा</u> सच्ची होगी' रेखांकित शब्द का अर्थ लिखिए। 1
उत्तर : जिज्ञासा का अर्थ है–जानने की इच्छा।
5. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1
उत्तर : दृढ़ संकल्प अथवा संकल्प की शक्ति।

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 7

रणबीच चौकड़ी भर–भर कर,
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था।
गिरता न कभी चेतक तन–पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि–मस्तक पर,
वह आसमान का घोड़ा था।
जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।
है यहीं रहा अब यहाँ नहीं,
है वहीं रहा अब वहाँ नहीं,
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
फिर अरि–मस्तक पर कहाँ नहीं।
कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में।

1. 'पड़ गया हवा का पाला था' का क्या अर्थ है? 2
उत्तर : इस पंक्ति का यह आशय है कि राणा प्रताप का घोड़ा इतनी तीव्र गति से दौड़ता था मानो उसने हवा को भी चुनौती दे दी थी।
2. कविता में चेतक के किस गुण का वर्णन है और क्यों? 2
उत्तर : कविता में चेतक की चाल/गति की तीव्रता का वर्णन है क्योंकि वह युद्धभूमि में शत्रुओं के मस्तक को कुचलकर मारता हुआ पूरी युद्ध भूमि में तेजी से दौड़ रहा था।
3. 'वह दौड़ रहा <u>अरि</u> मस्तक पर' रेखांकित शब्द के पर्यायवाची लिखिए। 1
उत्तर : शत्रु, बैरी, दुश्मन।
4. राणा प्रताप के घोड़े पर कोड़ा क्यों नहीं पड़ता था? 1

उत्तर : राणा प्रताप के घोड़े पर कोड़ा इसलिए नहीं पड़ता था क्योंकि वह समझदार तथा तीव्र गति से दौड़ता था।

5. घोड़ा चेतक ढाल, भाला और तलवार लिए शत्रुओं के बीच कैसे दौड़ता था? 1

उत्तर : घोड़ा चेतक ढाल, भाला और तलवार लिए शत्रुओं के बीच में निर्भीक (निडर) होकर तेजी से दौड़ता हुआ निकल जाता था।

अथवा

ज्यों निकलकर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर–फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।
देव मेरे भाग्य में हैं क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
जल उठूँगी गिर अँगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।
बह उठी उस काल इक ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुन्दर सीप का था मुँह खुला,
वह उसी में जा गिरि मोती बनी।
लोग अक्सर हैं झिझकते–सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें,
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।

1. घर से निकली बूँद के मन में क्या भाव थे और क्यों?

उत्तर : घर से निकली बूँद के मन में अनिश्चितता के भाव थे। क्योंकि उसे यह नहीं पता था कि अब वह कहाँ जाकर गिर जाएँगी।

2. घर छोड़ने वाले के साथ क्या होता है और क्यों?

उत्तर : घर छोड़ने वाले के सामने नई–नई स्थितियाँ सामने आती हैं। उन्हीं स्थितियों के अनुसार उसे अपने को ढालना होता है।

3. 'बूँद' यहाँ किसकी प्रतीक है?

उत्तर : बूँद यहाँ मनुष्य की प्रतीक है।

4. 'हवा' किसकी प्रतीक है?

उत्तर : 'हवा' परिस्थितियों की प्रतीक है।

5. कमल के फूल में–रेखांकित शब्द के पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर : जलज, पंकज, नीरज

खण्ड – ख (व्यावहारिक व्याकरण) 15

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 7

1. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

आहार, अनुशासन, अवकाश

उत्तर :

	उपसर्ग	मूलशब्द
1.	आ	हार
2.	अनु	शासन
3.	अव	काश

2. किन्हीं दो शब्दों में प्रयुक्त प्रत्यय एवं मूल शब्द अलग करके लिखिए– 2

त्यागी, पहनावा, गतिमान

उत्तर :

	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	त्याग	ई
2.	पहन	आवा
3.	गति	मान

3. किन्हीं तीन शब्दों के विग्रह करके समास का नाम लिखिए– 3

देशभक्ति, आजीवन, नवग्रह, तुलसीकृत

उत्तर :

	विग्रह	समास का नाम
1.	देश के लिए भक्ति	तत्पुरुष
2.	जीवन पर्यन्त	अव्ययी भाव
3.	नवग्रहों का समाहार	द्विगु
4.	तुलसी द्वारा कृत	तत्पुरुष

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए– 4

1. अर्थ के आधार पर किन्हीं दो वाक्यों में भेद लिखिए–2

1. अब बैठकर पढ़ो।

उत्तर : आज्ञावाचक

2. ईश्वर हर काम में आपकी सहायता करें।

उत्तर : इच्छावाचक

3. अहा, गाँव की हवा की बात ही कुछ और है।

उत्तर : विस्मयवाचक

2. निर्देशानुसार किन्हीं दो वाक्यों में परिवर्तन करके लिखिए– 2

1. मेरी चिट्ठी आई है। (प्रश्नवाचक में)

उत्तर : क्या मेरी चिट्ठी आई है?

2. यह तुमने क्या किया? (विस्मयवाचक में)

उत्तर : उफ! यह तुमने क्या किया।

3. अच्छी वर्षा से फसल भी अच्छी होती है (संकेतवाचक में)

उत्तर : वर्षा अच्छी होती है, तो फसल भी अच्छी होती है।

5. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं चार के अलंकार भेद पहचान कर लिखिए– 4

1. माला फेरत जुग भया, फिरा न मनका फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।
उत्तर : यमक अलंकार
2. पीपर पात सरिस मन डोला।
उत्तर : उपमा अलंकार
3. मुख बाल रवि सम लाल होकर, ज्वाल–सा बोधित हुआ।
उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार
4. वीती विभावरी जाग री। अंबर पनघट में डुबो रही तारा घट ऊषा नागरी।
उत्तर : मानवीकरण अलंकार
5. तरनि–तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।
उत्तर : अनुप्रास अलंकार

खण्ड – ग

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) 30

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

उन जैसा 'बर्ड वाचर' शायद ही कोई हुआ हो। लेकिन एकांत क्षणों में सालिम अली बिना दूरबीन भी देखे गए हैं। दूर क्षितिज तक फैली जमीन और झुके आसमान को छूने वाली उनकी नजरों में कुछ–कुछ वैसा ही जादू था, जो प्रकृति को अपने घेरे में बाँध लेता है। सालिम अली उन लोगों में से हैं जो प्रकृति के प्रभाव में आने की बजाए प्रकृति को अपने प्रभाव में लाने के कायल होते हैं। उनके लिए प्रकृति में हर तरफ एक हँसती–खेलती रहस्य–भरी दुनिया पसरी थी।

1. सालिम अली की नजरों में कौन–सी विशेषता थी? 2
उत्तर : सालिम अली की नजरों में ऐसी अद्‌भुत शक्ति थी कि वे धरती से आकाश तक फैली प्रकृति को अपने सम्मोहन से बाँध लेते थे। वे प्रकृति के रहस्यों के प्रति गहरा प्रेम रखते थे।
2. सालिम अली का प्रकृति के साथ कैसा सम्बन्ध था? 2
उत्तर : सालिम अली प्रकृति प्रेमी थे। वे प्रकृति से प्रभावित होने की बजाए उसे प्रभावित करने वाले लोगों में से थे। एक प्रकार से वे प्रकृति के संरक्षक थे।
3. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है; इसके लेखक का नाम लिखिए। 1
उत्तर : पाठ–साँवले सपनों की याद, लेखक–जाबिर हुसैन।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. 'दो बैलों की कथा' को ध्यान में रखते हुए सिद्ध कीजिए कि एकता में शक्ति होती है? 2
उत्तर : हीरा और मोती अच्छे मित्र थे। उन्होंने हर विपत्ति में एक–दूसरे का साथ दिया। जब एक साँड उन्हें मारने दौड़ा तो वे दोनों मिलकर उस पर पिल पड़े। एक उसे आगे से झेलता तो दूसरा उसके कूल्हे में सींग घुसा देता। इस प्रकार दोनों ने बलशाली साँड़ को मार गिराया। दोनों ने अपने व्यवहार से एकता की शक्ति को सिद्ध कर दिया।
2. तिब्बत के मार्ग में आदमी कम क्यों दिखाई देते हैं? 'ल्हासा की ओर' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए। 2
उत्तर : तिब्बत के मार्ग में आदमी कम इसलिए दिखाई देते हैं क्योंकि वहाँ कानून–व्यवस्था नहीं है। पुलिस और सुरक्षा प्रबन्ध न होने के कारण वहाँ कभी–कभी खून हो जाता है। नदी का मोड़ और पहाड़ का कोना होने के कारण वहाँ आबादी भी नहीं है।
3. सालिम अली के अनुसार, मनुष्य को प्रकृति की तरफ किस दृष्टि से देखना चाहिए? 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2
उत्तर : सालिम अली के अनुसार प्रकृति स्वयं में महत्त्वपूर्ण है। उसे उसी की दृष्टि से देखना चाहिए, अर्थात् हमें प्रकृति की खुशहाली और सुरक्षा की चिंता करनी चाहिए। हमें अपने सुख–विलास के लिए उसका उपयोग करने की नहीं सोचनी चाहिए।
4. प्रेमचंद सहज जीवन में विश्वास रखते थे। प्रेमचंद के फटे जूते पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए। 2
उत्तर : प्रेमचंद सहज जीवन जीने में विश्वास रखते थे। वे अंदर और बाहर की वेशभूषा में भी अंतर नहीं करते थे। वे अपनी गरीबी, फटेहाली और दुर्दशा को स्वीकार कर चुके थे। उसे छिपाना या उससे दूर हटना उनके स्वभाव में नहीं था। इसलिए फोटो खिंचवाते समय भी बनावटी वेशभूषा धारण करने का प्रयत्न नहीं किया।
5. हमारे समाज में महादेवी वर्मा के बचपन और वर्तमान स्थिति में क्या परिवर्तन आ चुका है? 'मेरे बचपन के दिन' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 2
उत्तर : आज हमारा समाज हिंदू–मुसलमान के भेद को लेकर पूरी तरह बँट चुका है। अब पहले जैसा आपसी प्यार नहीं रहा। दोनों जातियाँ एक–दूसरे को संदेह की नजरों से देखती हैं। इसमें राजनीतिक झगड़े अधिक हावी हैं।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 5

और सरसों की न पूछो
हो गई सबसे सयानी,
हाथ पीले कर लिए हैं
ब्याह–मंडप में पधारी
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे।

1. सरसों को सयानी कहने के पीछे क्या आशय है? 2

उत्तर : सरसों को सयानी कहने के पीछे दो आशय हैं–
1. फसल तैयार हो गई।
2. सरसों के पीले फूलों की शोभा सब ओर फैल गई।

2. कवि ने विवाह का वातावरण कैसे निर्मित किया है? 2
उत्तर : कवि ने विवाह का वातावरण तैयार करने के लिए चार क्रियाएँ दिखाई हैं–
1. लड़की (सरसों) का सयानी होना।
2. हाथ पीले करना।
3. ब्याह–मंडप रचाना।
4. शादी के गीत गाना।

3. 'फाग गाता मास फागुन आ गया है आज जैसे।' पंक्तियों में कौन–सा अलंकार है? 1
उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 8

1. सारे ब्रजवासी किस पर न्यौछावर हो गए? रसखान द्वारा रचित "सवैये" कविता के आधार पर लिखिए। 2
उत्तर : सारे ब्रजवासी कृष्ण के ग्वाल–रूप और सुमधुर वंशी–वादन पर न्यौछावर हो गए। जब से कृष्ण ने नंद की गायें चराईं और उनके बीच बैठकर मधुर वंशी बजाई, तब वे सब ब्रजवासी उन पर मोहित हो गए।

2. 'मृदुल वैभव की रखवाली–सी, कोकिल बोलो तो!' 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर भाव स्पष्ट कीजिए। 2
उत्तर : कवि के अनुसार, वैसे तो संसार में कष्ट ही कष्ट हैं। यदि कहीं कुछ मृदुलता और सरसता बची है तो वह कोयल के मधुर स्वर में बची है। अतः कोयल मृदुलता (मिठास/मीठा) की रखवाली करने वाली है। वह उससे पूछता है कि आखिर वह जेल में अपना मधुर स्वर गुँजाकर उससे क्या कहना चाहती है।

3. 'मेघ आए' कविता में मेघ के आगमन का चित्रण किस रूप में हुआ है? 2
उत्तर : इस कविता में मेघ के आगमन का चित्रण एक ऐसे सजे–सँवरे अतिथि के रूप में हुआ है जो बड़ी प्रतीक्षा कराने के बाद गाँव में आया है।

4. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। 2
उत्तर : 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' नामक कविता का उद्देश्य है–बाल मजदूरी को रोकना। कवि चाहता है कि बच्चों को खेलकूद और पढ़ाई–लिखाई का पूरा अवसर मिलना चाहिए। बचपन में उनके मन–मस्तिष्क पर कोई दबाव नहीं होना चाहिए। समाज को भी चाहिए कि वह बाल–मजदूरी रोकने का प्रयत्न करे। इसलिए कवि ने एक ओर काम पर जाने वाले नन्हें बच्चों की चिंता प्रकट की है, तो दूसरी ओर समाज की बेरुखी पर चिंता प्रकट की है।

5. 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर जेल में बंद कैदी की दयनीय दशा का वर्णन कीजिए। 2
उत्तर : जेल में बंद कैदी दयनीय दशा में जी रहे थे। वे ऊँची–ऊँची काली दीवारों में कैद थे। उन्हें कालकोठरी में जंजीरों से बाँधकर रखा जाता था। उन्हें खाने के लिये पूरा खाना भी नहीं दिया जाता था। उनसे कठिन परिश्रम कराया जाता था। कभी उन्हें कोल्हू के बैल की तरह जोत दिया जाता था तो कभी पत्थर तुड़वाए जाते थे।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 4

1. 'मेरे संग की औरतें' पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इंसानों को अधिक श्रद्धा से देखा जाता है? 2
उत्तर : इस पाठ के आधार पर स्पष्ट है कि ऊँची भावना वाले दृढ़ संकल्पी लोगों को श्रद्धा से देखा जाता है–
1. लेखिका की नानी ने परिवार और समाज से विरोध लेकर भी अपनी पुत्री का विवाह किसी क्रांतिकारी से करने की बात कही।
2. लेखिका की परदादी ने दो धोतियों से अधिक संचय न करने का संकल्प लिया था। उन्होंने परम्परा के विरुद्ध लड़के की बजाय लड़की होने की मन्नत माँगी थी।
3. लेखिका की माता ने देश की आजादी के लिए कार्य किया। कभी किसी से झूठ नहीं बोला। कभी किसी की गोपनीय बात को दूसरे को नहीं बताया। ये सभी व्यक्तित्व सच्चे, लीक से परे तथा दृढ़ निश्चयी थे। इस कारण इनका सम्मान हुआ। इन पर श्रद्धा प्रकट की गई।

2. 'भूख मीठी कि भोजन मीठा' से क्या अभिप्राय है? 'माटी वाली' पाठ के आधार पर लिखिए। 2
उत्तर : इस प्रश्न में यह तथ्य छुपा हुआ है कि भोजन मीठा या स्वादिष्ट नहीं हुआ करता, वह भूख के कारण स्वादिष्ट लगता है। इसलिए रोटी चाहे रूखी हो या साग या चाय के साथ, वह भूख के कारण मीठी प्रतीत होती है। अतः रोटी के स्वाद का वास्तविक कारण भूख होती है।

3. 'गरीब आदमी का श्मसान नहीं उजड़ना चाहिए।' इस कथन का आशय 'माटी वाली' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 2
उत्तर : इस कथन का आशय है–गरीब आदमी का रहने का ठिकाना नहीं छिनना चाहिए। गरीब आदमी अपने स्थान से उजड़कर दूसरे स्थान पर बसने में समर्थ नहीं होता। अपने मूल स्थान से उखड़ने पर उसकी मिट्टी खराब हो जाती है। वह मारा–मारा फिरता है। उसे अंतिम यात्रा अर्थात् श्मशान जाने तक वहीं रहना चाहिए, जहाँ का वह मूल निवासी है।

खण्ड – घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200–250 शब्दों में निबन्ध लिखिए– 10

(1) श्रम का महत्त्व

संकेत–बिन्दु : श्रम–आदर्श जीवन का मूल–मंत्र • उन्नति का आधार श्रम • सफलता पाने के लिए केवल इच्छा नहीं कर्मण्यता आवश्यक • देश को आगे बढ़ाने में श्रम का महत्त्व • उपसंहार

(2) विपत्ति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत

संकेत–बिन्दु : मित्र की पहचान • मित्र की आवश्यकता • चुनाव • सच्चा मित्र औषधि के समान • उपसंहार।

(3) मोबाइल फोन : कितना सुविधाजनक

संकेत–बिन्दु : अद्‌भुत वरदान • सुविधाएँ • हानियाँ • उपसंहार

उत्तर :

(1) श्रम का महत्त्व

संकेत–बिन्दु : श्रम–आदर्श जीवन का मूल–मंत्र • उन्नति का आधार श्रम • सफलता पाने के लिए केवल इच्छा नहीं कर्मण्यता आवश्यक• देश को आगे बढ़ाने में श्रम का महत्त्व • उपसंहार।

श्रम–आदर्श जीवन का मूल–मंत्र– 'श्रम' आदर्श जीवन का मूल मंत्र है। हमारे ऋषि–मुनियों ने, वेद–शास्त्रों ने–सभी ने एक स्वर से श्रम के महत्व को स्वीकार किया है। सच बात तो यह है कि श्रमशील व्यक्ति का अमृत–स्पर्श छोटे–से–छोटे कार्य को बड़ा एवं महान बना देता है।

उन्नति का आधार श्रम– सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक के इतिहास पर अगर हम नजर दौड़ाएँ, तो हम पाएँगे कि मानव ने निरंतर परिश्रम करके ही अपने विकास का पथ प्रशस्त किया है। आज संसार में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह उसके सतत परिश्रम का फल है। संसार के जितने भी उन्न्त और समृद्धशाली देश हैं, उन सबके पीछे परिश्रम का ही आधार है। द्वि तीय महायुद्ध ने जापान को लगभग तहस–नहस कर दिया था। उसके दो बड़े औद्योगिक नगर हिरोशिमा और नागासाकी अणु बम की मार से खंडहर–मात्र रह गए थे, पर आज जापान विश्व का सबसे अधिक संपन्न देश है, क्यों? इसका सिर्फ एक ही उत्तर है–उनके अपने सतत परिश्रम के कारण।

संसार के महान–से–महान व्यक्तियों ने अपना जीवन बहुत छोटे रूप से शुरू किया, लेकिन अथक परिश्रम करके वे उन्नति के चरम शिखर पर पहुँच गए। सत्य तो यह है कि संसार के बड़े और महान लोगों ने जीवन में छोटे–से–छोटा समझा जाने वाला कार्य भी पूरी लगन और श्रद्धा से किया है। बोझा ढोने वाला कुली तेनजिंग ही संसार की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट पर विजय–पताका फहरा सका है। सुभाषचंद्र बोस, अब्राहम लिंकन,लेनिन, गाँधी और संसार के असंख्य लोग–निरन्तर श्रम करके ही सफलता प्राप्त कर सके हैं। किसी लेखक ने कहा है, "यदि तुम में उद्योगी बनने की क्षमता है, तो अपनी सारी शक्तियों को केन्द्रित करके अपने उद्देश्य की पूर्ति में निरत हो जाओ, बाधाओं और विरोधों से भयभीत मत बनो। सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।"

सफलता पाने के लिए केवल इच्छा नहीं कर्मण्यता आवश्यक– उद्यम करने से ही कार्य सफल होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं। सोते हुए सिंह के मुख में पशु स्वयं प्रवेश नहीं करते।

कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है–

पुरुष हो पुरुषार्थ करो उठो, सफलता वर–तुल्य वरो, उठो।

अपुरुषार्थ भयंकर पाप है न उसमें यश है, न प्रताप हैं।

आज हमारे चारों ओर अकर्मण्यता का बोलबाला है। कोई भी व्यक्ति काम करके खुश नहीं है। श्रम और श्रम के मूल्य को ताक पर रखकर हम ताश में, चौपड़ में, सोने में, गपशप में अपना समय नष्ट कर रहे हैं। श्रम का गुरुमंत्र पढ़कर अन्य देश न जाने कितने आगे निकल गए हैं और हम आज आजादी के इतने वर्षों बाद भी, गरीबी की सीमा–रेखा के नीचे पड़े सिसक रहे हैं। हम गाल ही बजाते रहे और दुनिया वैभव की मीनार चढ़ गई।

देश को आगे बढ़ाने में श्रम का महत्त्व– आज भी इतना निराश होने की जरूरत नहीं है। जो बीत गया, उसे भूलकर यदि हम आज से ही परिश्रम करने का व्रत ले लें तो क्या नहीं हो सकता। धूल भरे वीरान रेगिस्तानों में लहलहाते खेत नजर आएँगे, चिमनियों से उठते हुए धुएँ से और मेहनतकश इंसानों के शोर से गरीबी सात समुंदर पार भाग जाएगी।

हमें सदा याद रखना चाहिए कि श्रम ही जीवन है। उन्नति और विकास का रास्ता श्रम से होकर जाता है। देश को आगे बढ़ाने में एकमात्र श्रम ही सार्थक है।

उपसंहार– आज श्रम का ही दूसरा नाम सफलता माना गया है। श्रम ही मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा आधार स्तंभ होता है। मनुष्य कठिन परिस्थिति से निकलकर ही सफलता हासिल करता है। अगर हम अपने जीवन में सफल होना चाहते हैं, तो श्रम करना आवश्यक है।

(2) विपत्ति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत

संकेत बिन्दु : मित्र की पहचान • मित्र की आवश्यकता • चुनाव • सच्चा मित्र औषधि के समान • उपसंहार।

मित्र की पहचान– कविवर गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित ये पंक्तियाँ मित्र की महत्ता बताने के लिए कितनी सटीक हैं। मनुष्य को मुसीबत के समय चार की परख (जाँच–पड़ताल) अवश्य करनी चाहिए–धैर्य, धर्म, मित्र और पत्नी। अर्थात् मुसीबत के समय जो हमारा साथ निभाए, वही मित्र है।

मित्र की आवश्यकता– मित्र की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को होती है। उसके जीवन में सुख–दुख आते रहते हैं। वह इनको किसी के साथ बाँटना चाहता है तथा अपनी इस आवश्यकता को पूरी करने के लिए अत्यंत करीबी व्यक्ति की कामना करता है। वह अपने दुख–सुख प्रत्येक को बता भी नहीं सकता है, क्योंकि–

"रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।।"

इस भौतिकवादी एवं मशीनी युग में मनुष्य आत्मकेन्द्रित और एक–दूसरे से दूर होता जा रहा है। ऐसे में मित्र की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है।

चुनाव– मित्र बनाते समय हमें अत्यन्त सावधान रहने की जरूरत होती है। किसी के दो–चार गुणों को देखकर मित्र बनाने की भूल नहीं करनी चाहिए। ऐसे मित्र प्रायः मुसीबत पड़ते ही साथ छोड़ जाते हैं। रहीम ने ऐसे मित्रों की तुलना तालाब के जल से करते हुए कहा है–

"जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को छोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़त छोह।।"

अर्थात् जिस प्रकार जाल पड़ने पर पानी मछलियों को छोड़कर तालाब में जा मिलता है और मछलियों को मरने के लिए छोड़ जाता है वैसा मछलियाँ नहीं कर पाती हैं। वे जल से लगाव रखती हैं, और साथ छूटते ही तड़पकर जान दे देती हैं।' मित्रों के पहचान की सबसे अच्छी कसौटी विपत्ति काल है।

सच्चा मित्र औषधि के समान– मित्र सच्चा है तो वह विपत्ति में कभी भी साथ नहीं छोड़ता है। वह कुसंगति में पड़े मित्र को सन्मार्ग की ओर ले जाता है। सच्चा मित्र औषधि के समान होता है जो उसे हर मुसीबत से बचाता है। वह मित्र के गुणों की प्रशंसा करने के साथ–साथ उसे बुराइयों से भी अवगत कराता है, जिससे व्यक्ति उनसे छुटकारा पा सके। वह सदैव अपने मित्र की भलाई की बात सोचता है। सच्चा मित्र भाई–बंधु की तरह होता है, जो खुशी हो या गम–हर अवसर पर हमारा साथ देता है।

उपसंहार– आज के इस युग में मित्र की आवश्यकता और महत्ता और भी बढ़ गई है। हमें भी मित्र के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि हम उससे अपेक्षा करते हैं। मित्रता के बीच कभी स्वार्थ को आड़े नहीं आने देना चाहिए। जिसे सच्चा मित्र मिल जाए, उसका जीवन सफल हो जाता है।

(3) मोबाइल फोन : कितना सुविधाजनक

संकेत बिन्दु : अद्‌भुत वरदान • सुविधाएँ • हानियाँ • उपसंहार।

अद्‌भुत वरदान– कहते हैं आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। जब–जब मनुष्य को आवश्यकता महसूस हुई तब–तब आविष्कार हुए हैं। जब मनुष्य आदिम था अर्थात् अपने विकास के प्रथम चरण में था, उसने पत्थर को रगड़कर आग का आविष्कार किया। पत्थरों के औजार और तन सजाने तथा सर्दी–गर्मी से बचने के लिए उसमें रंग–बिरंगे परिधानों का आविष्कार किया। इस प्रकार नित नए आविष्कार होते रहे, युग बदलते रहे। वास्तव में मनुष्य को जब जिस वस्तु की आवश्यकता पड़ी उसने उसे पाने के हर संभव प्रयास किए और आज भी यह प्रयास निरंतर जारी हैं। कम्प्यूटर, टी.वी., रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल फोन इत्यादि भौतिक वस्तुएँ इसके परिचायक हैं। आज से कुछ वर्ष पहले क्या हमने कभी कल्पना भी की थी कि हम फोन हाथ में लेकर घूमेंगे? हमारी टेक्नोलॉजी इतनी तेजी से आगे बढ़ रही है कि पलक झपकते ही विज्ञान का एक नया तथा अद्‌भुत वरदान हमारे सामने होता है।

मोबाइल फोन भी ऐसा ही एक वरदान है, जो "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" है। आज हर व्यक्ति के हाथ में इसे देखा जा सकता है। हो भी क्यों न, यह है ही इतना लाभदायक। आज मोबाइल एक मित्र की भाँति हमारे साथ रहता है और कभी भी अकेलापन महसूस नहीं होने देता। हर व्यक्ति इससे जुड़ा है।

सुविधाएँ– मोबाइल फोन के कई लाभ हैं; जैसे–कभी गाड़ी खराब हो गई, कहीं पर देर हो गई या कोई ऐसी घटना हो गई जिसकी आप किसी को सूचना देना चाहते हैं या सहायता लेना चाहते हैं, तो झट से यह मोबाइल फोन आपकी समस्या को हल कर देगा। केवल बात करने की ही नहीं, यह फोन अन्य सुविधाएँ भी देता है। तरह–तरह के खेल, कैलकुलेटर, फोनबुक की सुविधा, समाचार, चुटकुले, चटपटी बातें, ये तो आम सुविधाएँ हैं। 'एस.एम.एस' सबसे अधिक सस्ता साधन है, देश–विदेश कहीं भी अपना संदेश पहुँचाइए। कई लोग मिलकर बात कर सकते हैं और आप यदि कहीं काम में लगे हैं तो आपके लिए संदेश आपका मोबाइल स्वयं ले लेगा।

एक नई और महत्वपूर्ण सुविधा जो मोबाइल ने लोगों को दी है, वह है एस.एम.एस के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेना और अब तो प्रतियोगियों के भाग्य का फैसला भी जनता के हाथ में है। जितना

गुड़ डालिए, उतना ही मीठा होगा–चाहिए तो कैमरा लीजिए, ई–मेल की सुविधा प्राप्त कीजिए और भी न जाने क्या–क्या।

हानियाँ– प्रश्न यह उठता है कि अगर यह इतना लाभकारी है, तो फिर विद्यालय में अध्यापक इसके प्रयोग पर नाराज क्यों होते हैं? इस पर रोक क्यों लगाते हैं? यहाँ दोष मोबाइल का नहीं, इसका प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों का है; जो बिना सोचे–समझे इसका दुरुपयोग करने लगते हैं और तब यह लाभ देने के स्थान पर हानिकारक हो जाता है।

मोबाइल फोन का सबसे बड़ा दोष तो यह है कि यह समय–असमय यहाँ–वहाँ बजता ही रहता है। लोग सुरक्षा और शिष्टाचार भूल जाते हैं। गाड़ी चलाते समय फोन पर बात करना असुरक्षित ही नहीं, कानूनन अपराध भी है।

उपसंहार– हर चीज एक सीमा में हो तो अच्छा है क्योंकि तभी उसका लाभ और महत्त्व समझ में आता है। किसी का भी दुरुपयोग विनाश के गर्त में जाने का सरल मार्ग होता है। अगर मोबाइल फोन की सुविधा मिली है तो हमें उसका सदुपयोग करना चाहिए। यदि हम इसका उपयोग भली–भाँति सबके हित में कर सकें तो यह अन्य आविष्कारों की तरह हमारे लिए उपयोगी सिद्ध होगा अन्यथा इस वरदान को अभिशाप में बदलते देर नहीं लगेगी।

12. जन्मदिन की बधाई देते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए। 5

उत्तर :

गोखले छात्रावास,
सरदार पटेल विद्यालय,
मेरठ।
दिनांक : 7 अप्रैल, 2019
प्रिय सिद्धार्थ,
सप्रेम नमस्ते।

कल ही तुम्हारा पत्र मिला। तुम सपरिवार सकुशल हो, यह जानकर खुशी हुई। मेरी खुशी और भी तब बढ़ गई जब यह पता चला कि तुम्हारा जन्मदिन इसी माह की 12 तारीख को पड़ रहा है। जन्मदिन की तुम्हें खूब सारी बधाइयाँ। मेरी कामना है कि ईश्वर तुम्हें स्वस्थ एवं प्रसन्न रखे। मित्र मैं इस अवसर पर एक छोटा–सा उपहार भेज रहा हूँ। आशा है, तुम्हें जरूर पसंद आएगा।

मित्र, मैं तुमसे क्षमा भी चाहूँगा कि चाहकर भी मैं इस जन्मदिन पर तुम्हारे साथ इस मौके का आनंद नहीं उठा सकूँगा। इसी दिन लखनऊ में मेरी परीक्षा है। इस परीक्षा में शामिल होकर मैं 13 अप्रैल को ही मेरठ वापस आ सकूँगा। तब तुमसे जरूर मिलूँगा। जन्मदिन के शुभ अवसर पर न, पहुँच पाने के लिए एक बार पुनः क्षमा प्रार्थी हूँ। पुनः जन्मदिन की ढेरों शुभकामनाएँ।

अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम तथा सुचिता को स्नेह। शेष सब ठीक है।
तुम्हारा अभिन्न मित्र
अजय

अथवा

आपके पिता का स्थानांतरण अजमेर से दिल्ली हो गया है। आप मयूर स्कूल, आर्या नगर, दिल्ली के प्रधानाचार्य को प्रार्थना–पत्र लिखिए। जिसमें कक्षा IX में प्रवेश लेने की प्रार्थना की गई हो।

उत्तर :

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य
मयूर स्कूल
आर्या नगर, दिल्ली।
दिनांक : 20 अक्टूबर, 2019
विषय– प्रवेश के सम्बन्ध में।
महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं एल.बी.एस. पब्लिक स्कूल, अजमेर में नवमी कक्षा का विद्यार्थी था। मेरे पिता जी स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की अजमेर–जिला शाखा में कार्यरत थे। गत सप्ताह उनका स्थानान्तरण दिल्ली की किशन नगर शाखा में हो गया है। अब मैं सपरिवार आर्या नगर के डी.डी.ए. फ्लैट में रह रहा हूँ। मेरे निवास से यह विद्यालय निकटतम है। मैं इस विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम की नवमी कक्षा में प्रवेश लेना चाहता हूँ।

आपसे प्रार्थना है कि मुझे इस विद्यालय की नवमी कक्षा के अंग्रेजी माध्यम वाले सेक्शन में प्रवेश देने की कृपा करें। मैं आपका आभारी रहूँगा।
धन्यवाद सहित
भवदीय
सुनील
आर्या नगर, दिल्ली

13. दूरदर्शन के कार्यक्रमों के विषयों में पिता और पुत्री के बीच संवाद लिखिए– 5

उत्तर :

पिता– आजकल दूरदर्शन पर कार्यक्रमों की होड़ में अच्छे बुरे का ध्यान ही नहीं रह गया है।

पुत्री– हाँ, पिताजी! ऐसा ही है, पर कुछ अच्छे भी हैं।

पिता– हो सकता है, एकाध कार्यक्रम अच्छे भी हों, पर अधिकांश कार्यक्रम तो ऐसे हैं, जिनका न कोई उद्देश्य है और न ही कोई औचित्य।

पुत्री– लेकिन पिता जी! दूरदर्शन पर तो ऐसे अनेक कार्यक्रम आते हैं जो हमारे ज्ञान–विज्ञान को बढ़ाते हैं एवं स्वस्थ मनोरंजन भी करते हैं।

पिता– क्या तुम कहना चाहती हो कि अधिकांश कार्यक्रम ऐसे हैं जिनमें नैतिक मूल्यों का समावेश है। मैं तो जब भी देखता हूँ, या तो फिल्मी गीत या विज्ञापन की पूरी फिल्म।

पुत्री– आप ठीक कहते हैं पिताजी! फिल्मी कार्यक्रमों की तो बाढ़–सी आ गई है।

पिता– इन कार्यक्रमों के कारण लाखों–करोड़ों विद्यार्थियों को जो हानि हो रही है, उसकी ओर न तो फिल्म निर्माताओं का ध्यान जाता है और न ही उसे दूरदर्शन पर प्रसारित करने वाले अधिकारियों का।

अथवा

यात्री और बस ड्राइवर के बीच हुआ संवाद लिखिए–

उत्तर :

यात्री– भाई ड्राइवर जी! बस कितने बजे चलेगी?

ड्राइवर– तीन बजे।

यात्री– लेकिन तीन तो बज गए हैं, फिर यह देरी क्यों हो रही है?

ड्राइवर– बस चलने ही वाली है।

यात्री– आजकल बसों के चलने का कोई समय नहीं है। आप लोगों की जब इच्छा होती है, तब चलते हैं।

ड्राइवर– आप बिना वजह ही हम पर लांछन लगा रहे हैं। हमारी बसों की निश्चित समय–सारिणी है और हमारी सभी बसें उसी के अनुसार चलती हैं।

यात्री– अच्छा ठीक है जैसे चाहें जब चाहें बस चलाएं।

ड्राइवर– ठीक है साहब जी।

WWW.CBSE.ONLINE

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and paper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.